

## उपभोग फलन :-

उपभोग फलन अथवा उपभोग प्रवृत्ति आय उपभोग संबंध को दर्शाता है प्रतीकात्मक रूप से इस संबंध को इस प्रकार से प्रकट किया जा सकता है  $C=f(Y)$  यहा C उपभोग है Y आय हैं f फलनात्मक संबंध को प्रकट करता है। व्यक्ति अपनी आय का एक भाग उपभोग पर खर्च करता है और जो शेष बचता है उसे बचत कहते हैं।

$$C = C_0 + cY$$

Here  $c = MPC$

प्रेरित उपभोग  
स्वायत्त उपभोग

$$Y = C+S \text{ (Consumption + Savings)}$$

उपभोग और आय के बीच के सम्बन्ध को उपभोग प्रवृत्ति या उपभोग फलन कहते हैं। उपभोग व्यक्ति की आय पर निर्भर करता है। आय में वृद्धि होने पर उपभोग में वृद्धि तथा आय कम होने पर उपभोग में कमी आती है। अतः उपभोग प्रवृत्ति हमें यह बताती है कि आय में परिवर्तन होने से उपभोग में भी परिवर्तन हो जाता है, इसलिए यह कहा जाता है कि उपभोग आय का फलन है।

उपभोग प्रवृत्ति दो प्रकार की होती है

1. औसत उपभोग प्रवृत्ति
2. सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति

### 01. औसत उपभोग प्रवृत्ति-

कुल आय का जो भाग उपभोग में उपभोग में प्रयोग किया जाता है उससे ही औसत उपभोग प्रवृत्ति का निर्धारण होता है। अर्थात् औसत उपभोग प्रवृत्ति उपभोग आय के अनुपात को प्रदर्शित करता है। आय में वृद्धि के साथ-साथ उपभोग में वृद्धि होती है पर घटते क्रम में अर्थात् उपभोग आय का अनुपात (APC) में कमी आयेगी।

$$APC = \frac{C}{Y}$$

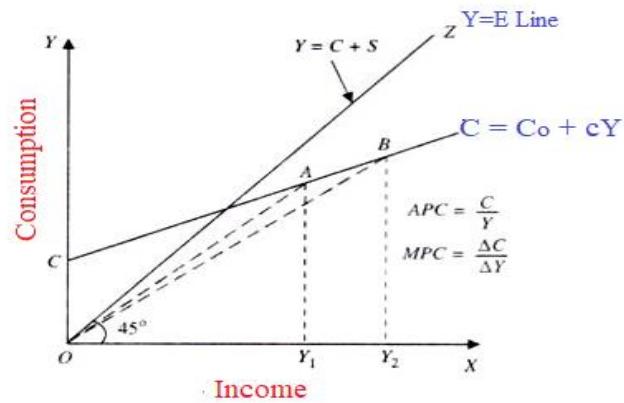
### 02. सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति -(MPC)

जब आय में परिवर्तन होता है, तो उपभोग की मात्रा में भी परिवर्तन होता है। अर्थात् जब आय में वृद्धि होती है, तो उपभोग बढ़ता है और आय में कमी होती है तो उपभोग में भी कमी आती है। आय में वृद्धि या कमी और उपभोग में वृद्धि या कमी के अनुपात को सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति कहते हैं।

$$MPC = \Delta C / \Delta Y \quad MPC = \Delta C / \Delta Y < 1$$

Where,  $\Delta$  (delta) indicates the change (increase or decrease), and

C denote consumption and Y denote income.



रेखाचित्र में OZ रेखा आय बराबर व्यय समता रेखा को प्रदर्शित करता है।  $C = C_0 + cY$  उपभोग रेखा को प्रदर्शित करता है। उपभोग रेखा का ढाल MPC को तथा OA, OB रेखा जो उपभोग फलन से मूल बिन्दु की मिलान बिन्दु रेखा है का ढाल जो क्रमशः घटता जा रहा है APC को प्रदर्शित करता है। अर्थात् औसत उपभोग की प्रवृत्ति क्रमशः घटती जायेगी आय के क्रमशः बढ़ने पर तथा उपभोग के बढ़ने पर ।

उपभोग फलन सारणी (Linear Consumption Function)

आय Y	उपभोग C	$APC = \frac{C}{Y}$	Marginal Propensity to Consumer $\left(\frac{\Delta c}{\Delta y}\right)$
0	100	$\frac{100}{0} = \infty$	—
100	150	$\frac{150}{100} = 1.5$	$\frac{50}{100} = 0.5$
200	200	$\frac{200}{200} = 1.0$	$\frac{50}{100} = 0.5$
300	250	$\frac{250}{300} = 0.83$	$\frac{50}{100} = 0.5$
400	300	$\frac{300}{400} = 0.75$	$\frac{50}{100} = 0.5$
500	350	$\frac{350}{500} = 0.70$	$\frac{50}{100} = 0.5$

### बचत— (Savings)

आय का कुछ भाग जो उपभोग के बाद शेष बचता है उसे बचत कहते हैं। ( $S = Y - C$ )

$$S = -S_0 + sY$$

┌— धनात्मक बचत  
└— ऋणात्मक बचत

Here  $s = MPS$

बचत की 02 प्रवृत्ति देखने को प्राप्त होती है।

**01. औसत बचत की प्रवृत्ति**— बचत आय के अनुपात ( $APS = S/Y$ ) को औसत बचत की प्रवृत्ति कहते हैं।

**02. बचत की सीमान्त प्रवृत्ति**— आय में परिवर्तन के परिणामस्वरूप बचत में परिवर्तन की दर को सीमान्त बचत प्रवृत्ति कहते हैं ( $MPS = \Delta S/\Delta Y$ )। यह बचत आय में परिवर्तन का अनुपात भी कहा जाता है।

$$Y = C + S$$

$$\frac{\Delta Y}{\Delta Y} = \frac{\Delta C}{\Delta Y} + \frac{\Delta S}{\Delta Y}$$

$$1 = MPC + MPS$$

$$MPC = 1 - MPS (s)$$

$$MPS = 1 - MPC (c)$$